बी॰ए॰ भाग-2
हिन्दी-रचना
'उत्तर सीता-चरित'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी॰ के॰ कालेज,
डुमराँव, बक्सर (बिहार)

'उत्तर सीता-चरित' - कलक्टर सिंह केसरी

सीता का चरित्र-चित्रण -

कलक्टर सिंह केसरी कहते हैं- "पति परित्यक्ता किन्तु मातृ-पद-गर्विता इसी सीता पर मेरी कविता रीझ गई।" तात्पर्य यह कि उत्तर सीता चरित में उस सीता का चरित्र विकसित हुआ है, जो पति-परित्यक्ता होने का दुख मातृ-गर्विता होकर भुला बैठी है।

सीता का मातृ-स्नेह केवल अपने पुत्रों कुश और लव तक सीमित नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि उसका स्नेह अपने पुत्रों पर कम है। वह अपने पुत्रों के कल्याण के लिए निरंतर चिंतित रहती है। पति द्वारा परित्याग की पीड़ा में वह रह-रहकर डूब जाती है, किन्तु विरजा उसे समझाती है कि वह सब कुछ भुला अपने पुत्रों के भविष्य की पीड़ा का ही एकमात्र वहन करे। वस्तुतः सीता पति-परित्याग को उस शुकी का अभिशाप मानती है, जिसे उसने बचपन में उसके शुक से अलग कर पिंजड़े में बंद कर रखा था और जो चार माह में ही पति-वियोग में मर गई थी। किन्तु विरजा लव-कुश की ओर संकेत कर कहती है -

सारी चिंताएँ भुला
आ गए थे अब इन्हें सम्हाल सखी
पिछली पीड़ाओं का निदान
अब नई पीर यह पाल सखी।

सीता भी पुत्र के भविष्य की पीड़ा को सबसे अधिक महत्व देती है और मानती है कि –

जिस नारी को यह पीर नहीं
वह सचमुच भाग्य वंचिता है।

सीता के सोचने की धारा बदलते ही उसे प्रियतम राम के साथ मधुर दिन याद आने लगे, जब लवकुश को उसने अपने गर्भ में धारण किया था –

वह दुपहरी रूप की थी-प्राण-धन की मानिनी मैं
दो हृदय की क्षुद्र सीमा में बँधी अनुरागिनी मैं
आज मंगल मातृपद पा भुवन में अभिमानिनी मैं।

मातृपद का ही अभिमान सीता-चरित्र का सर्वस्व है। स्थिति यह है कि सीता अपने पुत्रों को दिव्यगुणों से विभूषित और संपूर्ण विद्याओं की खान बना देखना चाहती है। यही कारण है कि जब ऋषिवर बताते हैं –

"पुत्र तुम्हारे स्वयं सिद्ध हैं"...
मात्र आवृत्ति कर रहे उनकी,
जो पढ़ी हुई सम्यक विद्याएँ प्राक्रम' कोमल किशोर पर
धनुर्वेद के पंडित तेजस्वी राघव से ये राघव नंदन –

तब 'पुलकिता जानकी की आँखें भर आई।' पुत्रों के उज्ज्वल भविष्य को सुन माता का हृदय भर आया – यही उसका मातृ-गर्विता रूप है।

सीता फिर भी अपने पुत्रों में राम से अधिक अपनी छवि देखना चाहती है, इसीलिए कहती है –

संतानें मेरी होनी थीं मुझ जैसी हो गए किन्तु ये
लवकुश पिता सरीखे।'

सीता को संतोष तब होता है जब ऋषि बताते हैं, तुम लव-कुश में अदृश्य आत्मा होकर बैठी हुई हो और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण तुम उनके कोकिल कंठ से रामायण गान सुनकर प्राप्त कर सकती हो।

सीता को अपने पुत्रों के स्वत्व की भी चिन्ता है, किन्तु उसका भी निदान वाल्मीकि यह कहकर करते हैं कि राम के अश्वमेघ-यज्ञ में रामायण-गान सुना उसके पुत्र राम के द्वारा अपना लिये जायेंगे, फिर स्वत्व स्वतः मिल जायेगा। किन्तु सीता को यह तरीका गा-बजाकर भीख माँगने जैसा लगा, किन्तु ऋषि आश्वस्त करते हैं कि उसके पुत्र सिंह हैं और सिंह अपने सिंहनाद से ही अपना स्वत्व स्वयं प्राप्त कर लेता है।

लव-कुश के स्नेह में भींगी हुई सीता का चरित्र वस्तुतः व्यापक है- उसका मातृ-स्नेह तो पशुओं और पादपों तक फैला हुआ है। यही कारण है कि वह मृगछौनों को कलश से जल पिलाती हुई उन्हें ऐसे देखती है जैसे माता अपनी इकलौती संतान को देखा करती है। वह नव बिरवे को इस तार तन्मयता से सींचती है, जैसे माता अपने नवजात शिशु का लालन करती है। वह बबूल-वृक्ष पर इसलिए अधिक ममत्व दिखाती है, क्योंकि लव-कुश से आठ माह वह बड़ा है और उसी ने सर्वप्रथम सीता में मातृत्व को जगाया था।

सीता के चरित का दूसरा पहलू है ऋषि वाल्मीकि के प्रति अपार श्रद्धा। वह उन्हें पितृतुल्य मानती है। कहती भी है-

'कुलपति कृपालु ते पिता-तुल्य'।